अध्ययन सामग्री

एम० ए० – सत्र – 3

हिन्दी

डॉ० वज्राँग प्रताप केसरी

हिन्दी विभाग,

एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

10/02/24

## वक्रोक्ति सम्प्रदाय

दीपक के आगे
पढ़ो कोने पाली
दीपक बोलता ही
स्वभावतः व्यंजना

**वक्रोक्ति सम्प्रदाय :→** 'वक्रोक्तिजीवितम्' के प्रणेता कुन्तक वक्रोक्ति को ही काव्य का प्राण मानते हैं। उनके अनुसार काव्य में कथ्य या अनुभूति का उतना महत्व नहीं होता जितना कथन की वक्रता या वाग्वैदग्ध्य का होता है। उक्ति में लोकोत्तर चमत्कार उत्पन्न करने की क्षमता वक्रोक्ति कहलाती है और यही वक्रता काव्य की आत्मा है।

काव्य में जब कोई कवि सामान्य अर्थ का भी प्रतिपादन करता है तो उसका विशिष्ट प्रभाव व्यक्त करता है। उस संदर्भ में कवि जिस उक्ति का प्रयोग

करता है वह सामान्य लोगों से भिन्न तथा विचित्र होती है। इसी उक्ति वैचित्र्य के कारण वह सामान्य अर्थ भी काव्य बन जाता है। यह उक्ति भंगिमा काव्य को विशेष गरिमा प्रदान करती है। उदाहरणार्थ – शकुन्तला की सखी राजा दुष्यन्त से यह नहीं पूछती कि वे कहाँ से आये हैं; बल्कि वह यह पूछती है कि महाराज ने किस देश की प्रजा को अपने वियोग की पीड़ा से व्याकुल बनाया है – यही उक्ति वैचित्र्य काव्य की आत्मा है।

भामह ने अलंकारों के प्रयोग में उक्ति-वक्रता का निर्देश किया है। यथा मुख का सौंदर्य-बोध कराने के लिए कोई उपमा, कोई रूपक तथा-कोई अतिशयोक्ति अलंकार की योजना करता है। यह विभिन्न अलंकारों का प्रयोग ही उक्ति की वक्रता है। वक्रता का अर्थ है - लोकोत्तर चमत्कारजनकता - लोकोत्तर चमत्कार उत्पन्न करने की क्षमता - और यह लोकोत्तर सौंदर्यबोध ही वक्रोक्ति है।

आलोचकों का इस पर आक्षेप यह है कि केवल वक्रता के कारण काव्य का अस्तित्व मानना - वक्रता को ही काव्य का प्राण मानना उसे वाक्जाल में बाँधना है। केवल उक्तिगत चमत्कार से महत् काव्य की रचना नहीं होती। महाकाव्य के लिए भावबोध की सघनता जरूरी है।